REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

# वर्तमान परिवेश और योगीराज वाघमारे

**डॉ डॉ. मारुती शिंदे**
सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष.
हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र.
वालचंद कला व विज्ञान महाविद्यालय , सोलापुर.

**प्रस्तावना :**

शताब्दियों से जारी गतिरोध तोडकर मुक्ति का अहसास करनेवाले दलित-पीडितों के जीवन का चित्र दलित साहित्य के माध्यम से मराठी साहित्य जगत में स्थिर हुआ। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में जो नई वाङ्मयीन प्रवृत्तियाँ एवं प्रतीति साहित्य में अपने पगचिन्ह जमाने लगी , उसमें दलित साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। " डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के दर्शन से दलित अनुभव जाग उठा और शताब्दियों का मौन टूट गया। जिनकी इन्सानीयत का इन्कार किया गया उनकी पीडा को अर्थ प्राप्त हुआ। पोथीनिष्ठा , अंधविश्वास , देव एवं दैव शरणता के द्वारा कुचला गया मानवी मन नई विज्ञाननिष्ठ ललकार से सजग हुआ। नवजीवन का अहसास घेरा मुक्त होकर नया आशय अविष्कृत होने लगा। यह नया उदगार था उसी का नाम दलित साहित्य। " ( दलित कथा , संपा. डॉ. गंगाधर पानतावणे , प्रा. चंद्रकुमार नलगे , दलित कथा काही विचार , पृष्ठ - 6 ) इस दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में योगीराज वाघमारे जी दलित साहित्य जगत में पहचाने जाते हैं। 1970 में उनकी पहली कहानी ' उद्रेक ' अस्मितादर्श में प्रकाशित हुई और दलित साहित्य के अध्येताओं को एक नया रत्न मिला। योगीराज वाघमारे जी की पहचान कराते हुए डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते हैं - " कुलीन मराठी मिट्टी का रत्न माने योगीराज वाघमारे। येरमाळा की मिट्टी से नागसेन वन में आए हुए योगीराज ने अपने साथ बहुत अनुभव लाए थे। उन अनुभवों को सिर्फ गढना था। प्रत्यक्ष अजमाया हुआ ग्रामीण जीवन , देहातों के दु:ख देखे हुए। जिस प्रकार ग्रामशासन में सडे हुए लोग देखे उसी प्रकार इस मवेशीखाने से मुक्ति पाने के लिए छटपटाने वाले लोग भी देखे। अम्बेडकर नाम का सूर्य शहरों की तरह देहातों की झोंपडी-झोंपडी में गया और चिंगारियाँ कैसे भडकी यह वाघमारे जी ने प्रत्यक्ष अजमाया। " ( लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे,पृष्ठ - 91 ) इन भडकी हुई चिंगारियों में से एक चिंगारी याने स्वयं योगीराज वाघमारे भी है।

मराठवाडा के विद्यार्थियों के लिए औरंगाबाद का नागसेन वन याने उनका तिर्थक्षेत्र है। मिलिंद महाविद्यालय और नागसेन वन का परिसर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के पदस्पर्श से पावन और रोमांचित बना हुआ है। इस परिसर की मिट्टी अपने ललाटपर लगाकर अनेक विद्यार्थी अलग-अलग क्षेत्रों में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की सन्निकटता में नागसेन वन का हर कन बौरा गया। इसी मिट्टी में ही गाँव-गाँव से पढने की जिद लेकर आए हुए लडके भी अपने जीवन का अर्थ ढूँढने लगे। जिनके पूर्वजों को लेखनी देखने और अक्षर घोटने की मनाही थी, ऐसे घरों से आए हुए लडकों को अब अक्षरों की पहचान हो गई। उन्होंने ज्ञान से दोस्ती की और उन्हें चार दिवारों के बीच की शिक्षा अधूरी लगने लगी। अपने समाज के जीवन का चित्रण इन किताबों में नहीं समाता। उन्हें लगने लगा कि हमारी दुनिया ही अलग है। इसी अस्वस्थता से ही फिर अपने जीवनानुभवों कों शब्दों के द्वारा अभिव्यक्ति देते हुए ये लडके लिखने

लगे। कोई कविता , कोई कहानी , कोई नाटक , कोई उपन्यास के माध्यम से अम्बेडकरी संस्कारों का मनोविश्व चितारने लगा। इसी नागसेन वन की देन है जीवन संघर्ष का विदारक चित्र खिंचनेवाला कहानीकार। उसने दलितों की दुनिया को एक अलग ढंग का अस्तित्व दिया। उसी का नाम है योगीराज वाघमारे।

स्वतंत्रता के बाद जिस विशिष्ट कालखंड के सोपानपर योगीराज वाघमारे कहानीकार के रूप में साहित्य जगत में आए , उस कालखंड की गतिविधीयों का जायजा लेते हुए हमें यह दिखाई देता है कि डॉ. अम्बेडकर की प्रतिभा से प्रेरित हुए और जिनके क्रांति गर्भ दर्शन से स्वाभिमान से जीने की उम्मीद लेकर पढे-लिखे दलित युवक देख रहे थे कि पढने-लिखने के बावजूद भी जातिय भावना हमारा पिछा नहीं छोडती। कदम-कदम पर अपमान बोया हुआ रहता है। शिक्षा से नई प्रतिती और जागृती आई लेकिन बेरोजगारी और उससे आई हुई अवहेलना खतम नहीं हो पाती यह आगतिकता उन्हें सताती थी। तो कुछ दलित युवक पढ लिखकर परिवार का रिश्तों का और समाज का इन्कार करते हुए दिखाई देते थे। समाज से जुडे रहे तो अपनी जाति लोग जान जाएंगे यह भावना उन्हें समाज से दूर ले जाती थी। झूठी प्रतिष्ठा की कल्पना से ये युवक जाति और उपनाम भी बदल रहे थे। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में ग्रामीण स्तर पर दलितों का सत्ता में सहयोग निभाने के सुचिन्ह दिखाई देने लगे लेकिन सिर्फ दलित व्यक्ति सरपंच भी हुआ तो उसकी चाय की प्याली अलग , उसे झंडा पहराने से दूर रखने का प्रयत्न , वह अपनी मर्जी से मतदान करने का अधिकार भी निभा नहीं पाता। बहिष्कार , अवहेलना और स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार तो रोज चल रहे थे। महाराष्ट्र में दलित जीवन का यह वास्तव योगीराज वाघमारे जी ने अपनी कहानियों में से पाठकों के सामने लाया। लेकिन ये दाहक अनुभव चित्रित करते हुए उन्होंने उन्हें अत्यंत संयमी एवं संयत ढंग से पेश किया। उनकी पेशगी में कहीं पर भी आक्रोश , छीज घिसाई दिखाई नहीं देती। उनकी संयमीत विन्यास के संदर्भ में डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते हैं - उन्होंने अपनी कहानियों में दलित जीवन का अंकन अत्यंत संयमित ढंग से किया है। संयम चुभनेवाला होता है , काट खानेवाला होता है , अस्वस्थ करनेवाला होता है। घटनाओं में न फंसते हुए घटना के पीछे होनेवाले सच को ढूँढना ही वाघमारे जी के कहानी की गुणवत्ता है। ( लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ-27 )

योगीराज वाघमारे जी ने अपने लेखन के हर सोपान पर वर्तमान का ध्यान रखा है और नवसमाज निर्माण का मार्ग दिखाया है। चाहे उनकी 1970 की पहली कहानी ' उद्रेक ' हो या ' पर्याय ' नामक 2011 की कहानी हो। वाघमारे जी की ' उद्रेक ' कहानी भी वर्तमान का ध्यान रखनेवाली ही है। पवनी की प्रथा का इन्कार करनेवाला शेटीबा उस जमाने का मैट्रिक उत्तीर्ण और अम्बेडकरी प्रेरणा से प्रभावित युवक है। उस जमाने में भी पढे लिखे युवकों को सतानेवाला बेरोजगारी का प्रश्न तो वर्तमानकालीन है ही लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि शेटीबा का अम्बेडकरी विचारों पर होनेवाला विश्वास। उस जमाने में यह धारणा थी कि पढ लिखकर मनुष्य विचारी एवं सदाचारी बनता है। इसीलिए ही अम्बेडकर जी के संदेशानुसार दलित समाज शिक्षा को अपने उद्धार का मार्ग समझता था। इस कालखंड में पढ लिखकर भी जातिप्रथा के व्यवसाय ही करने पडते है यह चित्र यदि सामने आता तो दलित समाज में शिक्षा के संबंध में अनास्था निर्माण हो जाती और परिवर्तन का मार्ग ही यह समाज खो देता। इसीलिए शेटीबा पवनी प्रथा के काम का इन्कार कर मलफेन उठाने का काम स्वीकृत करता है। इस संदर्भ में दलित आंदोलन के कर्णधार राजा ढाले जी ने गुडदाणी कहानी संग्रह की प्रस्तावना में अत्यंत मौलिक विश्लेषण किया है। जैसे नौकरी के अलावा जिनके पास कोई पर्याय नहीं उन्हें नौकरी ही नहीं मिलेगी तो उनके अभिभावकों के मन में शिक्षा के बारे में वैफल्य निर्माण होकर उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में ही न भेजने का निर्णय लिया तो ? ऐसा हुआ तो जिनके लिए कितनी सदियों से शिक्षा के दरवाजे बंद थे वही लोग सदियों के बाद महत्प्रयास से अपने लिए खुले हुए ये दरवाजे अपने ही हाथों से बंद करने के कारण बनेंगे यह भविष्यकालीन धोखा भी उद्रेक में ध्वनित हुआ है और यह समाजविघातक संभाव्य धोखा पहचानकर ही इस कहानी ने एक अलग मोड लेकर नया रास्ता अपनाया है। (गुडदाणी , योगीराज वाघमारे, प्रस्तावना,पृष्ठ- 11-12 )

योगीराज वाघमारे जी की ' होरपळ ' कहानी भी एक डरावने सच का समाज को साक्षात्कार करानेवाली है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के क्रांति गर्भ दर्शन से अभिभूत युवा पीढि आगे चलकर अम्बेडकरी आंदोलन की सिपाही बनी। लेकिन अम्बेडकर की मृत्यु के बाद आंदोलन बिखर गया। गुटबंदी की राजनीति का बोलबाला रहा और सच्चे , ईमानदार , दिलोजान से काम करनेवाले कार्यकर्ताओं के जिंदगी की दुर्गति हो गई उनके जिंदगी का दाह हो गया।' होरपळ ' का नायक तात्या एक ऐसा ही कार्यकर्ता था। उनके उत्कर्ष के कालखंड में जातिवादियों के विरोध में आंदोलन , पार्टी का काम , धम्म का काम उत्साह से करनेवाले तात्या , दलितों के बच्चों को स्कूल में डालना , देवीभक्तों के बाल काटना , कोर्ट कचहरी के काम करना , सगाईयाँ तय करना , दलितों पर अन्याय करनेवालों के विरोध में लढना , दलितों को सुविधाएँ दिलवाना , जमिने दिलवाना आदि काम वह करता था। लेकिन जमाना बदल गया और ईमानदार कार्यकर्ताओं का उपहास किया जाने लगा और तात्या की जिंदगी झुलसने लगी। एक जमाने में राजवैभव भोगनेवाले तात्या अन्न के लिए मोहताज हो गए। आज की इस मतलब की दुनिया में वे अपनी लडकी का विवाह भी नहीं कर पाए। जब वे देखते है कि नौकरी के गाँव से अपने गाँव में आए हुए साहब अपने घर आए है तब उनका स्वागत कर तात्या अपनी लडकी लता को चाय बनाने को कहते हैं। साहब के साथ गप्पें लडाते-लडाते वे दीनभाव से प्रार्थना करते हैं- लता के लिए कोई पढा लिखा लडका देखिए ना ! पाँचछ: वर्ष हुआ होगा ऋतुमति होकर। ( गुडदाणी , होरपळ, योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-52 ) इस बात पर आपने अभी तक कोई लडका नहीं देखा यह प्रश्न पुछते ही तात्या ने दिया हुआ उत्तर बहुत ही अस्वस्थ करनेवाला है। देखे ना ! ....फिर ? .....दहेज ....नौकरी और सिफारीश करनेवालों की लडकी उन्हें चाहिए मेरे पास क्या है ? यह गिरा हुआ घर और .... तात्या की यह असहायता देखकर सुननेवाला चकरा जाता है। लेखक ने तात्या के दाह का जो वर्णन किया है वह हमें अंतर्मुख करनेवाला है। जब लता चाय लेकर आयी तब लता को शरीर ढकने के लिए अच्छी साडी भी नहीं थी। जगह-जगह पर गाँठे लगी हुए चिथडे में वह लज्जा रक्षण कर रही थी ..... तात्या के गृहस्थी की हालत देखते-देखते जगह पर ही बर्फ की तरह जम गया और तात्या तस्तरी में डाली गयी चाय फुर्रर्र ..... से पी रहे थे मुक्ति संग्राम की यादें बताते हुए उत्साहित प्रफुल्लित मन से आंदोलन के ईमानदार कार्यकर्ता के जीवन की वर्तमान में होनेवाली यह हालत पढकर हम भी जगह पर ही बर्फ की तरह जम जाते हैं इसमें कोई संदेह नहीं। उनकी ' अंधार ' कहानी भी ऐसे ही वर्तमान का ध्यान रखनेवाली और समाज में होनेवाले अलगाव एव गुटबंदी पर प्रकाश डालनेवाली है। कहानी की नायिका बायजा अम्बेडकर जयंती में मायके जाने के लिए अपने भाई की राह देखती रहती है। उसका भाई अशोक उसे मायके में ले जाने के लिए आता है और गाँव में जयंती उत्सव की तैयारी के संबंध में गप्पे लडाता है। इसी के बीच वह बताता है कि अब गाँव में दो जयंती उत्सव होंगे क्योंकि अब पँथर में राजा ढाले और नामदेव ढसाळ के दो गुट बने हैं। इसलिए ढसाळ गुट का प्रकाश और ढाले गुट का अशोक ये दोंनो दो अलग-अलग जयंती उत्सव मनानेवाले हैं। प्रकाश एवं अशोक ये दोंनो चचेरे भाई मिलकर जयंती उत्सव मनाते थे। लेकिन अब उनमें मनमुटाव आ गया दो गुट बन गए। अशोक बता रहा था और बायजा को अपने पिताजी के जमाने का जयंती उत्सव याद आया। हमारे पिताजी थे उस जमाने में जयंती उत्सव कैसे होता था। घर-घर के लोग बाल बच्चे चबूतरे पर इकट्ठा होते थे। बुजुर्ग लोग आकाश में ऊंचा झंडा फहराते थे। नतमस्तक होकर बाबासाहब की तस्वीर को वंदन करते थे। हम बच्चों को बताते थे। बेटा यह हमारे देवता है बाबा , इन्होंने हमें आदमी की जिंदगी दी। उन्होंने बताया पढो , खुब पढो , उसके अलावा उद्धार नहीं है। यह भी बताया कि संघटित रहो , एकजूट होकर रहो तो तुमसे कोई पंगा नहीं लेगा। क्या किसी ने शेर को बली चढाया है ? भेड बकरियों को बली चढाया जाता है। और बताया कि संघर्षरत रहो स्वाभिमान से जियो अन्याय के विरोध में विद्रोह करो। बोलो डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की ऽऽऽ ( उद्रेक , अंधार , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-72 ) अशोक जयंती उत्सव की तैयारी की कहानी बता रहा था और बायजा जयंती में मायके न जाने का निर्णय

पक्का कर रही थी। वह अशोक को बताती है लेकिन मैं जयंती में नहीं आऊँगी। मुझे नहीं देखना तुम्हारा ठाठ वह आगे यह भी कहती है कि सच मुझे नहीं चाहिए जहाँ भाई-भाई में झगडे होंगे वहाँ का पानी भी मैं नहीं पिऊँगी। अशोक जब ढसाळ और ढाले गुट का और अपने प्रेस्टिज का उल्लेख करता है तब बायाजा तुरंत कहती है आग लगाओं तुम्हारे गुटों को और इसके बाद अशोक की स्थिति हारे हुए योद्धा की तरह बन जाती है। बायजा का गला भर आया , वह बोल नहीं पा रही थी , सिसकी रुंध गई। इतनी देर चुपचाप बैठकर टुकूर-टुकूर देखनेवाले बच्चे भी रोने लगे। लेकिन सोनबा आँखों से अंधेरा चीर रहा था। और चित्ते की शिकार पर झेप चुक जाए और उसके नाखुन जिस प्रकार मिट्टी में धस जाए उसी तरह अशोक गर्दन नीचे झुकाकर बैठा था। ( उद्रेक , अंधार , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-73 ) आज की स्थिति तो इससे भी भयंकर हई लेकिन अलगाववादियों का इन्कार करनेवाली बायजा तो नहीं है। योगीराज वाघमारे बायजा के माध्यम से हमें गुटबंदी बेबनाव का इन्कार करने को बताते हैं।

गुटबंदी की राजनीतिक उलझन ऐसी ही बढती रही, दलित नेता राजनीतिज्ञों के तंबू में घूस गए और अपनी सुविधा ( भला) देखने लगे और देहातों में दलितों का कोई पक्षधर नहीं रहा। इस सारी अनास्था से ही आज वर्तमान में एक अलग ही स्थिति हमारे सामने निर्माण हो गई है। इस स्थिति का चित्रण हमें योगीराज वाघमारे जी के ' पँसेंजर' कहानी में मिलता है। आज गाँव-गाँव में महाजन और उच्चजातीय सवर्ण समाज ने दलितों का जीना मुश्किल कर दिया है यह हमें खैरलांजी की घटना से दिखाई देता है। लेकिन जिंदा लोग यह अमानूश अत्याचार कितने दिन सहेंगे। उनका जींना ही अस्वीकार किया गया तो वे औरों को भी जीने नहीं देंगे। हम सुनते है कि नक्सलवादी आंदोलन इसी स्थिति से उभरा है। योगीराज वाघमारे जी ने ठीक इसी स्थिति का चित्रण पँसेंजर में किया है। दलित साहित्य संमेलन समाप्त होने पर लेखक नागपुर से हैद्राबाद की ओर रेल से निकलता है और पास के खाली सीट पर एक मुसाफिर आकर बैठता है। दोंनो की जान पहचान होती है और दलित साहित्य , पँथर का आंदोलन आदि बातों पर गप्पे छीड जाती है। साथ में बैठा हुआ मुसाफिर अपने गाँव की कहानी सुनाता है। गाँव में उसका दो एकड सूखा खेत है। बिरादरी के लोगों को एकजूट कर उसमें ट्यूब वेल खुदवायी, पानी लगा , एक एकड जमीन सिंचित हो गयी। लेकिन गाँव के बडे जमींदारो ने षड्यंत्र रचा। गाँव में बैठक हो गई और जानवरों कोऔर लोगों को पीने के लिए पानी देने का प्रस्ताव पारित हो गया। और बीच में ही वह कहते हुए रुक गया। इतने में रेल की गति धीमि हो गई और साथ में बैठा हुआ मुसाफिर गायब हो गया। वह पायखाने की ओर गया होगा यह सोचकर लेखक राह देखता रहा और इतने में पुलिस आकर डंडा पटकते हुए बताने लगा कि सजग रहो , खिडकियाँ ठीक से बंद करो। क्या हुआ कहकर लेखक के पुछ्ते ही पुलिस बताने लगा अजी इस इलाके में वारग्रुप के लोगों का बहुत आतंक है। चलती गाडी की जंजीर खींचकर रोकते है और जंगल में गायब हो जाते हैं। दो दिन पहले ही एक नक्सलवादी ने ....एक जमींदार की हत्या की थी ....ट्यूबवेल के पानी के लिए इसलिए। ( बहिष्कार , पँसेंजर, योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-44 ) इतना बताकर पुलिस निकल गया। लेखक सामने की सीट की ओर देखने की हिम्मत नहीं जूटा पा रहा था। उसे बहुत पसीना छूट रहा था। योगीराज वाघमारे जी ने इस मुसाफिर की कहानी से वर्तमान हमारे सामने कौनसा संकट लेकर आया है, इस बात की ओर इशारा किया है। योगीराज वाघमारे अपनी अनेक कहानियों में समकालीन घटना और उनके परिणामों का चित्रण करते हैं। इसीलिए हमें यह कहना पडता है कि इस लेखक का वर्तमान पर ध्यान है। इस संदर्भ में डॉ. गंगाधर पानतावणे जी ने कहा है - उद्रेक , बेगड और गुडदाणी ये वाघमारे के तीन कहानी संग्रह , इन तीनों संग्रहों की कहानियाँ सिर्फ भूतकालीन घटनाओं में ही मशगुल नहीं होती, बल्कि समकालीन वास्तवता को लक्षित करती है। दलित और सवर्णो का संघर्ष तो है ही उससे बढकर भी दलित और दलित के बीच के संघर्ष का वाघमारे सामना करते हैं। फिर यह संघर्ष सांस्कृतिक संघर्ष का , मूल्यात्मकता का रूप लेता है। शिक्षित दलित युवक और अशिक्षित परिवार , उच्चशिक्षा के कारण दलित युवतियों के बने हुए नए प्रश्न , इस देश को संविधान ने समता

का सूत्र दिया लेकिन पढे लिखे युवकों की , शिक्षकों की अवहेलना बौद्धधर्म को स्वीकार तो किया लेकिन उसकी तात्विकता खो देने की अज्ञानमूलक संभाव्यता , ऐसी आज की समस्याओं का जिक्र वाघमारे करते हैं और फिर उनकी कहानी वर्तमान की बन जाती है आज के संदर्भ की बन जाती है। (लेणी, डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ-92 )

योगीराज वाघमारे सिर्फ वर्तमान को हमारे सामने रखकर नहीं रुकते तो वे नवसमाज निर्मिती का मार्ग हमें दिखते हैं। उनकी कलम नहीं रुकती वह हमें फिर से नयी दुनिया का व्रत लेकर वर्तमान में ही जीने के लिए सजग करती है लेकिन उनका यह रास्ता भी फिर बाबा ने दिखाए हुए रास्ते से ही जाता है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी ने बेहद कष्ट उठाकर व्यवस्था के साथ संघर्ष करते हुए दलितों के उद्धार का मार्ग संविधान के द्वारा प्रशस्त किया। लेकिन अर्थरचना में वे मार्ग अवरुद्ध बन गए है। योगीराज वाघमारे हमें क्षितिज नामक लघु उपन्यास में अशोक के माध्यम से संदेश देते हैं कि महारों को वतन में मिली हुई जमिनों की सामूहिक पद्धति से जोताई बोवाई करो और खेती में नए तकनिकी का प्रयोग करो और इसके लिए लगनेवाला धन नौकरी करनेवालों से जुटाओ। क्षितिज का नायक एम. एस्सी. ॲग्री करनेवाला अशोक गाँव के बिरादरीवालों को बताता है- हर एक ने अपनी-अपनी छोटी खेती करने के अलावा सामूहिक खेती करेंगे ..... पहले जगह-जगह पर बाँध बनाएँगे। पानी रोकेंगे। स्त्रावित तालाब बनाएंगे। बेर, सिताफल , ईमली , आँमला के पेड लगाएंगे। हर घर में एक गाय और भैंस पालेंगे। डेअरी शुरू करेंगे। ( भिमयुग , योगीराज वाघमारे , क्षितिज , पृष्ठ-89 -90 )

निस्संदेह डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों से ईमान रखते हुए वर्तमान का ध्यान रखकर भविष्य का मार्ग दिखानेवाला योगीराज वाघमारे नामक लेखक दलित समाज का सहोदर है।

## संदर्भ :-

1 ) लेणी , पृष्ठ - 91 - डॉ. गंगाधर पानतावणे
2 ) बहिष्कृत भारत : अग्रलेख , दिनांक- 16 – 09 – 1927 , डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
3 ) दलित कथा , दलित कथा काही विचार संपा. डॉ. गंगाधर पानतावणे , प्रा. चंद्रकुमार नलगे